नैदानिक मनोवैज्ञानिक (Clinical Psychologist) बनने की प्रक्रिया काफी लंबी और चुनौतीपूर्ण होती है क्योंकि इसमें न केवल सैद्धांतिक ज्ञान, बल्कि गहन व्यावहारिक अनुभव (Practical Experience) की भी आवश्यकता होती है।

भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी शिक्षा और प्रशिक्षण का विवरण नीचे दिया गया है:

---

1. शैक्षणिक योग्यता (Educational Path)

नैदानिक मनोवैज्ञानिक बनने के लिए शैक्षणिक यात्रा आमतौर पर चार मुख्य चरणों में पूरी होती है:

- **स्नातक (Bachelor's Degree):** सबसे पहले मनोविज्ञान (Psychology) में B.A. या B.Sc. करना अनिवार्य है। यहाँ छात्र मनोविज्ञान की बुनियादी अवधारणाओं जैसे संज्ञानात्मक, सामाजिक और विकासात्मक मनोविज्ञान को सीखते हैं।
- **स्नातकोत्तर (Master's Degree):** स्नातक के बाद मनोविज्ञान या नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) में M.A. या M.Sc. करना होता है। इसमें नैदानिक मूल्यांकन और उपचार के सिद्धांतों की गहरी समझ विकसित की जाती है।
- **M.Phil. (Clinical Psychology):** भारत में एक **RCI (Rehabilitation Council of India)** लाइसेंस प्राप्त नैदानिक मनोवैज्ञानिक बनने के लिए 2 साल का M.Phil. प्रोग्राम सबसे महत्वपूर्ण कदम है। इसमें छात्रों को अस्पतालों में प्रत्यक्ष रोगी देखभाल का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- **Ph.D. / Psy.D. (Doctorate):** अनुसंधान में रुचि रखने वाले छात्र Ph.D. करते हैं, जबकि पूरी तरह से चिकित्सा अभ्यास (Clinical Practice) पर ध्यान केंद्रित करने वाले छात्र Psy.D. करते हैं।

---

2. व्यावहारिक प्रशिक्षण (Clinical Training)

सिर्फ डिग्री हासिल करना काफी नहीं है; नैदानिक मनोविज्ञान में **सुपरवाइज्ड ट्रेनिंग (Supervised Training)** अनिवार्य है:

- **इंटर्नशिप (Internship):** डिग्री के दौरान या बाद में, छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य केंद्रों या अस्पतालों में वरिष्ठ मनोवैज्ञानिकों की देखरेख में काम करना पड़ता है।
- **प्रैक्टिकम (Practicum):** यह शैक्षणिक सत्र के दौरान किया जाने वाला अल्पकालिक व्यावहारिक कार्य है, जहाँ छात्र मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Testing) और साक्षात्कार (Interviewing) करना सीखते हैं।

---

3. आवश्यक कौशल (Essential Skills)

शिक्षा के साथ-साथ एक अच्छे क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट में निम्नलिखित कौशल होने चाहिए:

कौशल	विवरण
सहानुभूति (Empathy)	रोगी के दर्द और स्थिति को उनके नजरिए से समझने की क्षमता।
विश्लेषणात्मक सोच	जटिल लक्षणों को जोड़कर सटीक निदान (Diagnosis) करने की क्षमता।
धैर्य और संचार	रोगी की बात ध्यान से सुनना और उसे प्रभावी ढंग से अपनी बात समझाना।
नैतिकता (Ethics)	रोगी की जानकारी को गोपनीय रखना और पेशेवर मर्यादा बनाए रखना।

---

4. लाइसेंस और प्रमाणन (Licensing in India)

भारत में **'नैदानिक मनोवैज्ञानिक'** कहलाने के लिए कानूनी रूप से **RCI (भारतीय पुनर्वास परिषद)** में पंजीकृत होना अनिवार्य है।

- लाइसेंस प्राप्त करने के लिए छात्र को RCI द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान से **M.Phil (Clinical Psychology)** पूरा करना होता है।
- बिना लाइसेंस के क्लिनिकल प्रैक्टिस करना अवैध माना जा सकता है।

---

5. वैज्ञानिक-अभ्यासी मॉडल (Scientist-Practitioner Model)

प्रशिक्षण के दौरान **'बोल्डर मॉडल'** का पालन किया जाता है। इसका अर्थ है कि एक मनोवैज्ञानिक को:

1. एक **वैज्ञानिक (Scientist)** होना चाहिए जो नए शोध को पढ़ता और समझता है।
2. एक **अभ्यासी (Practitioner)** होना चाहिए जो उन शोधों का उपयोग रोगियों के इलाज के लिए करता है।